# ॥ श्री हनुमान चालीसा ॥

**दोहा**

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निजमन मुकुरु सुधारि |
बरनउं रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि ||
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार |
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ||

**चौपाई**

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुं लोक उजागर |
राम दूत अतुलित बल धामा, अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ||

महाबीर बिक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी |
कंचन बरन बिराज सुबेसा, कानन कुण्डल कुँचित केसा ||

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे, कांधे मूंज जनेउ साजे |
शंकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग वंदन ||

बिद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर |
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया ||

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, बिकट रूप धरि लंक जरावा |
भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज संवारे||

लाय सजीवन लखन जियाये, श्री रघुबीर हरषि उर लाये |
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ||

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं, अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं |
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा ||

जम कुबेर दिगपाल जहां ते, कबि कोबिद कहि सके कहां ते |
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा ||

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना, लंकेश्वर भए सब जग जाना |
जुग सहस्र जोजन पर भानु, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ||

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लांघि गये अचरज नाहीं |
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ||

राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे |
सब सुख लहै तुम्हारी सरना, तुम रच्छक काहू को डर ना ||

आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हांक तें कांपै |
भूत पिसाच निकट नहिं आवै, महाबीर जब नाम सुनावै ||

नासै रोग हरे सब पीरा, जपत निरन्तर हनुमत बीरा |
संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ||

सब पर राम तपस्वी राजा, तिन के काज सकल तुम साजा |
और मनोरथ जो कोई लावै,सोई अमित जीवन फल पावै ||

चारों जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा |
साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकन्दन राम दुलारे ||

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता |
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ||

तुह्मरे भजन राम को पावै, जनम जनम के दुख बिसरावै |
अंत काल रघुबर पुर जाई, जहां जन्म हरिभक्त कहाई ||

और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेइ सर्ब सुख करई |
सङ्कट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ||

जय जय जय हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरुदेव की नाईं |
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बन्दि महा सुख होई ||

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा |
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय महं डेरा ||

**जय श्रीराम, जय हनुमान, जय हनुमान |**

Presented by: www.bhaktibhawna.com प्रस्तुति: भक्तिभावना